रामचंद्र शुक्ल की भाषा

प्रोफ़ेसर -रौशन कुमार (हिन्दी विभाग)
जनता कोशी महाविद्यालय बिरौल

हिन्दी प्रतिष्ठा ।।।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी के सर्वश्रेष्ठ निबंधकार माने जाते हैं। उनके निबंध चिंतामणि भाग 1 और भाग 2 में संकलित है। उनके यह निबंध हिंदी साहित्य में निबंध कला के आदर्श माने गए हैं। विशेष रूप से विचारात्मक निबंध कैसे होने चाहिए इसका आदर्श परिचय चिंतामणि के निबंधों से प्राप्त होता है। चिंतामणि में संकलित निबंध दो प्रकार के हैं मनोविकार संबंधी निबंध और समीक्षात्मक निबंध। दोनों प्रकार के निबंधों की भाषा शैली अलग-अलग है। मनोविकार संबंधी निबंधों की भाषा अपेक्षाकृत

सरल,व्यवहारिक और बोलचाल के शब्दों से युक्त भाषा है जिसमें स्थान -स्थान पर मुहावरों का प्रयोग किया गया है जबकि समीक्षात्मक निबंधों की भाषा गंभीर, संस्कृतनिष्ठ और परिभाषिक शब्दों से युक्त है। भाषा और शैली की दृष्टि से उनके निबंध अत्यंत उच्च कोटि के हैं। विचारों के विवेचन ,विषय निरूपण और सिद्धांत प्रतिपादन में उनकी भाषा शैली अत्यंत सक्षम और सशक्त है। उनके निबंधों की भाषा शैली संबंधी प्रमुख विशेषताओं का निरूपण निम्नवत किया जा सकता है।

शुक्ल जी की भाषा संबंधी विशेषताएं

1 शुक्ल जी की भाषा शुद्ध साहित्यिक हिंदी है जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों की प्रमुखता है।

2 उनका भाषा विषयक दृष्टिकोण अत्यंत उदार था उन्होंने संस्कृत शब्दों के साथ-साथ अरबी -फारसी और अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग भी अपनी

भाषा में किया है। यथा शौकीन, बदतमीज, मतलबी, बेवकूफ, इनट्यूशन, इमेज, रोमांटिसिज्म

आदि ।

3 शुक्ल जी का वाक्य विन्यास व्यकारणसम्मत और सुगठित है उसमें हिन्दी की मूल प्रवृत्ति का ध्यान रखा गया है, अंग्रेजी वाक्य रचना से उनकी भाषा मुक्त है।

4 शुक्ल जी की भाषा में उपमा, रूपक उत्प्रेक्षा, आदि अलंकारों का प्रयोग है किन्तु ये अलंकार चमत्कार प्रदर्शन के लिए न होकर विषय को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए प्रयुक्त किए गए हैं।

5 शुक्ल जी की भाषा परिष्कृत प्रौढ़ और साहित्यिक है जिसमें प्रकाशन की अद्भुत क्षमता है।

6 उनके निबंधों की भाषा में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें कहीं भी बोझिलपन ,उलझन और अस्पष्टता नहीं है। व्याकरण सम्मत है अशुद्धियों से युक्त है और विराम चिन्हों का प्रयोग अत्यंत सजगता से किया गया है।

7 शुक्ल की भाषा में सामासिक पदों का सहज विधान किया गया है। जैसे शक्ति- सौंदर्य समन्वित ,कर्म भावना प्रसूत, वस्तु व्यापार योजना आदि। 8 शुक्ल जी की भाषा में 80% शब्द संस्कृत के तत्सम शब्द है जिसमें बीच-बीच में तद्भव शब्द नगीनों की भांति जड़ दिए गए हैं जैसे छेड़-छाड़ गड़बड़झाला, सेंत- मैंत धरा- धर चटक -मटक खुल्लम-खुल्ला आदि।